जो चाहते वैसा होता क्यों नहीं?

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मन, वचन और काया ये तीनों कार्य करने के साधन हैं। पूर्वजन्म के किये हुए कर्म के परिणाम को बदलकर हम कुछ नया प्राप्त करना चाहते हैं। हम पुरुषार्थ करते हैं किन्तु जैसा चाहते हैं वैसा नहीं हो पाता। पिछले जन्म में हमने जैसा किया है उसी का भुगतान वर्तमान जीवन है। इस जन्म में हमें नया कुछ भी प्राप्त नहीं होता। परीक्षा में जैसा उत्तर पुस्तिका में लिखा गया है उसी का मूल्यांकन परीक्षक करता है। परीक्षा दे देने के बाद परीक्षक के अधीन मेरा भाग्य हो गया उसे हम नहीं बदल सकते। वह नियत है। क्रियमाण कर्म उदय भाव में आकर परिणाम देते हैं।

प्रकृति का नियम है कि जैसा कारण है वैसा कार्य होगा। इसमें परिवर्तन नहीं किया जा सकता। हमारा आयुष कर्म ही जीवन को चलाता है। यह शरीर भुगतान के लिए है उसे भुगतना ही पड़ेगा। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के अनुरूप ही परिणाम मिलता है। हमारे चाहने या न चाहने से परिवर्तन नहीं हो सकता। जैसा हमने किया है वैसा भुगतना पड़ेगा। मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है। पूर्वजन्म के कर्म के अनुरूप भुगतान के लिए वर्तमान जन्म है। अपने चाहने से कुछ नहीं होता। **ईश्वरेच्छा बलीयसी** अर्थात् ईश्वर के अधीन सब कुछ है। उसकी इच्छा के बिना एक पता भी नहीं हिलता।

चुनाव के समय जब दो प्रतिद्वन्दी आमने–सामने चुनाव लड़ते हैं तो दोनों को जितने की आशा रहती है। किन्तु जीतना हारना उनके बस में नहीं है। जैसा परिणाम होगा उसे स्वीकार करना पड़ेगा। इस संसार में सभी सुख चाहते हैं दुःख कोई नहीं चाहता फिर भी दुःख प्राप्त हो जाता है। यदि सब कुछ अपने हाथ में रहे तो सभी सुख ही सुख को प्राप्त कर लें। दुःख कोई प्राप्त न करें, किन्तु ऐसा सम्भव नहीं है। सुख और दुःख जीवन के दो पड़ाव हैं और जीवन में आते–जाते रहते हैं।

भारतीय संस्कृति ईश्वर केन्द्रित है। ईश्वर सबकुछ कर सकता है। जिस व्यक्ति की सहायता ईश्वर करता है, उसको कोई नहीं मार सकता। चाहे पूरा संसार ही उसके विरुद्ध हो जाय फिर भी उस व्यक्ति का बाल भी बांका नहीं हो सकता। सूक्ति रूप में कहां जाये तो इसको इस रूप में कहा जा सकता है–

जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोय,

बाल न बांका कर सके जो जग बैरी होय।

कोई भी व्यक्ति कर्मों से बड़ा या छोटा होता है। यदि वह अच्छा कर्म करता है, सदाचार पूर्वक व्यवहार करता है, ईश्वर पर विश्वास करता है तो निश्चित ही ईश्वर भी ऐसे व्यक्ति की सहायता करता है। किन्तु जो व्यक्ति आलसी है, दूसरों के सहारे जीवन यापन करने की परिकल्पना करता है, नास्तिक है, उसकी सहायता कोई नहीं कर सकता। ईश्वर पर आस्था रखने का अर्थ है सकारात्मक दृष्टिकोण रखना और ईश्वर पर आस्था न रखने का मतलब है निषेधात्मक दृष्टिकोण रखना।

जो व्यक्ति सकारात्मक दृष्टिकोण रखता है हर वस्तु को विधेयात्मक दृष्टि से देखता है, वह किसी के साथ बैरभाव नहीं रखता है। प्रह्लाद के पिता हिरणाकश्यप बहुत घमंडी और अहंकारी था। वह ईश्वर में विश्वास नहीं करता था। स्वयं को ही ईश्वर मानता था। किन्तु प्रह्लाद ईश्वर का भक्त था और अपने पिता को ईश्वर नहीं मानता था। इससे उसके पिता बहुत नाराज हुए और प्रह्लाद को जान से मारने के लिए अनेक षड्यंत्र रचे। किन्तु प्रह्लाद की रक्षा तो स्वयं ईश्वर कर रहे थे। इसलिए हिरणाकश्यप के द्वारा रचा गया सम्पूर्ण षडयंत्र विफल हो गया और प्रह्लाद का बाल भी बांका नहीं हुआ।

इस दृष्टांत से ईश्वर के अस्तित्व का पता चलता है। सैंकड़ों प्रयत्न के बावजूद भी हिरणाकश्यप प्रह्लाद को न मार सका। जिसके रक्षक स्वयं भगवान है उसको इस संसार में कोई भी मार नहीं सकता। इस दृष्टांत से यह भी ज्ञात होता है कि भक्त प्रह्लाद का ईश्वर में पूर्ण भरोसा था और उनका यही भरोसा ईश्वर को साकार रूप में प्रकट करके हिरणाकश्यप का वध करा दिया। हिरणाकश्यप नास्तिक था। इसी प्रकार का दृष्टांत हमें महाभारत में भी

मिलता है। भरी सभा में दुर्योधन ने जब द्रौपदी का अपमान किया और अपने भाई दुस्साशन से द्रौपदी का चीरहरण करवाया तो उस समय द्रौपदी असहाय होकर भगवान श्रीकृष्ण की शरण में गयी।

भगवन श्रीकृष्ण ने द्रौपदी की साड़ी को इतना बड़ा कर दिया कि हजारो हाथियों की शक्ति रखनेवाला दुस्साशन हार मानकरके गिर गया। द्रौपदी को पूर्ण विश्वास था जब आदमी निःसहाय होकर ईश्वर की शरण में जाता है तो निश्चित ही ईश्वर उसकी पुकार को सुनते है और उसकी रक्षा करते है। इसी प्रकार का उदाहरण गज—ग्राह का भी है। जब तक हाथी को अपनी शक्ति पर विश्वास था तब तक वह अपना पूरा जोर पानी से निकलने के लिए लगाया। किन्तु जब उसने यह देख लिया कि शक्ति काम नहीं आ रही है तब वह असहाय होकर ईश्वर की शरण में गया और ईश्वर ने उसकी जान बचाई। आदमी में यदि अहंकार है तो ईश्वर उसकी सहायता नहीं करते।